डॉ० कविता कुमारी सिंह

हिन्दी - विभाग

पी० जी०, तृतीय सेमेस्टर

विषय— भारतीय काव्यशास्त्र का इतिहास —

काव्यशास्त्र काव्य और साहित्य का दर्शन तथा विज्ञान है। संस्कृत आलोचना के अनेक अभिधानों में अलंकार शास्त्र ही नितान्त लोकप्रिय अभिधान है। काव्य की आत्मा पर विविध काव्यशास्त्रकारों में मतभेद रहा है। इस मतभेद के कारण 500 ई० पू० से लेकर प्रथम शदी तक एवं 1750 तक के कालखण्ड में रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य सम्प्रदाय इन छः सिद्धान्तों, सम्प्रदायों की रचना हुई। साहित्यशास्त्र में 51 आचार्य मा जाते हैं और इनमें से किसी न किसी सम्प्रदाय से संबंधित हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र ग्रन्थ प्रमुख साहित्यशास्त्र के ग्रन्थ हैं। इनमें रस और ना के सूक्ष्म तत्वों का विवेचन हुआ है। यहाँ

साहित्यशास्त्र का बीजभूत है। भामह अलंकारशास्त्र के प्रथम आचार्य माने जाते हैं। उनका भामहालंकार ग्रन्थ अलंकारशास्त्र का मुख्य ग्रन्थ है।

भामह से लेकर आनन्दवर्द्धन तक 200 वर्षों में अलंकार सम्प्रदाय, रीति-सम्प्रदाय रस सम्प्रदाय और ध्वनि सम्प्रदाय इन चार मुख्य सम्प्रदायों के मौलिक ग्रन्थों का निर्माण हुआ है। चारों सम्प्रदाय का नाम इस प्रकार है।—

अलंकार सम्प्रदाय — भामह, उद्भट, रुद्रट।

रीति सम्प्रदाय — दण्डी, वामन।

रस सम्प्रदाय — भट्टलोल्लट, शंकुक और भट्टनायक आदि।

ध्वनि सम्प्रदाय — आनन्दवर्धन।

यह काल साहित्यशास्त्र की दृष्टि से बड़ा ही महत्वपूर्ण है। इसमें भट्ट भामह, उद्भट और रुद्रट ने

काव्य को बाह्य-स्वरूप अलंकारों का निरूपण किया है, वहीं दूसरी ओर दण्डी और वामन ने काव्य की रीति और उसके गुणों की विवेचन की है।

हेमचन्द्र, विश्वनाथ और जयदेव आदि ने काव्य की सर्वांग एवं पूर्ण विवेचन करते हुए काव्य-शास्त्र पर अबतक के स्थापित सिद्धान्तों को लेकर अपने ग्रन्थों की रचना की है। राजशेखर, क्षेमेन्द्र अमरचन्द्र आदि ने कवि-शिक्षा के विषय पर अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया है। उस काल के आचार्य के अवदानों को हम विविध सम्प्रदायों के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण कर सकते हैं।

ध्वनि सम्प्रदाय — मम्मट, विश्वनाथ, हेमचन्द्र विद्याधर, जयदेव आदि।

रस सम्प्रदाय — शारदातनय, सिंहभूपाल, भानुदत्त गोस्वामी आदि।

कवि-शिक्षा — राजशेखर, क्षेमेन्द्र, अमरदेवेश्वर आदि।

अलंकार सम्प्रदाय — पंडितराज जगन्नाथ, विश्वेश्वर पंडित आदि।

ध्वनि सिद्धान्त को साहित्यशास्त्र में मुख्य सिद्धान्त माना गया है।

रस सम्प्रदाय — आचार्य भरत ने रस को काव्य की आत्मा माना है —

'विभावानुभावव्यभिचारि संयोगात् रसनिष्पत्ति:'

रस सिद्धान्त के व्याख्याकार भट्टनायक, भट्टलोलट, अभिनवगुप्त तथा विश्वनाथ हैं।

काव्यशास्त्र के सबसे प्राचीन सम्प्रदाय रस सम्प्रदाय है। इसके ~~सं~~ संस्थापक भरत मुनि हैं। भरतमुनि ने लिखा है — "विभावानु व्यभिचारि संयोगात् रसनिष्पत्ति:" अर्थात विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।